ग़ुसले मय्यत व तकफ़ीन का मसनून तरीक़ा

ePamphlet

بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم

इस्लाम ऐहतरामे इन्सानियत का दरस देता है हमें ना सिर्फ़ ज़िन्दा इन्सान बल्कि मरने वाले के ऐहतराम का भी हुक्म दिया गया है इसी ऐहतराम का तक़ाज़ा है कि मरने के बाद मय्यत को नेहला कर साफ़ सुथरे लिबास में दुनिया से रुख़सत किया जाए.

ग़ुसले मय्यत

ग़ुसल कौन करवाए ?

- क़रीबी रिशतेदार ग़ुसल देने के ज़्यादा मुस्तिहक़ हैं.
- जो दीन का इल्म रखने वाले और आदाबे ग़ुसल से वाक़िफ़ हों.
- मर्द मर्दों को और औरतें औरतों को ग़ुसल दें,शोहर अपनी बीवी की मय्यत को और बीवी अपने शोहर की मय्यत को ग़ुसल दे सकती है.
- ग़ुसल देने वाले के पास सिर्फ़ वो ही लोग हों जो इस काम में उसके मददगार हों. इज़ाफ़ी इफ़राद की मौजूदगी नापसंदीदा है.
- मय्यत में कोई ऐब या नागवार चीज़ नज़र आए तो पर्दापोशी करने और राज़ रखने वाले हों.

नबी करीमﷺ ने फ़रमाया: जिसने किसी मय्यत को ग़ुसल दिया और उसकी पर्दापोशी की,अल्लाह ताला उसके गुनाहों की पर्दापोशी फ़रमाएगा. (المعجم الكبير للطبرانی: 8077)

ग़ुसल के लिए दरकार अशया:

- ग़ुसल के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला तख़्ता
- दो,तीन बालटियां और मग्गे
- वाफ़र मिक़दार में साफ़ और नीम गर्म पानी
- रूई का बन्डल
- साबन, शेमपू
- बेरी के पत्ते
- काफ़ूर
- कंघी
- क़ैंची

- चंद जोड़े रबड़ या कपड़े के दस्ताने
- एक यो अदद तोलिये
- डस्ट बिन या शोपिन्ग बैग
- तीन अदद गहरे रंग की चादरें जो मय्यत पर दौराने ग़ुसल पर्दा करने और उठाने के लिए इस्तेमाल होंगी.

नोट:बेरी के पत्तों को कूट कर किसी बर्तन में पानी के साथ इस तरह मिलालें कि उनका झाग निकल आए फिर इस पानी को छानकर बाक़ी पानी में मिलादें नीज़ एक बालटी पानी में सिर्फ़ काफ़ूर मिलाकर अलग रखलें.

ग़ुसल देने की जगह

- ग़ुसल देने की जगह मुनासिब हो जहाँ पर्दे का इन्तेज़ाम और पानी का निकास आसान हो. जगह इतनी कुशादा हो कि तख़्ते के इलावा ग़ुसल देने वालों के बैठने और ग़ुसल का सामान वग़ैरह रखने में परेशानी ना हो.
- मय्यत को नहलाने वाला तख़्ता सर की जानिब से कुछ ऊँचा हो ताकि इस्तेमाल शुदा पानी बहता रहे इसके लिए सर की तरफ़ तख़्ते के नीचे दो ईंटें रखी जा सकती हैं.

ग़ुसल की तैयारी

ग़ुसल की जगह दाख़िल होने से पहले بسم الله और ग़ुसल ख़ाने में दाख़िल होने वाली मसनून दुआ भी पढ़लें-

- मय्यत जिस बिस्तर पर हो उसी चादर से उठा कर तख़्ते पर लाएें अगर ख़ातून मय्यत उठाने में मुश्किल दरपेश हो तो मोटी चादर से ढाँपकर मय्यत के मेहरम मर्द हज़रात से मदद लेकर ग़ुसल के तख़्ते पर लिटाया जा सकता है और इसी तरह ग़ुसल देने के बाद उठवाया जा सकता है-
- ख़ातून मय्यत की पिन,क्लिप,चूड़ियाँ,बुन्दे,नाक का लोंग और लिबास वग़ैरह मय्यत के जिस्म से अलग करलें. अगर कपड़े आसानी से ना उतर सकें तो क़ैंची के साथ एहतयात से काटलें.

© ADHOA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

- ग़ुसल देते वक़्त मय्यत पर गहरे रंगों वाली फूलदार चादर डाललें ताकि लिबास उतारने और गीला होने पर भी पर्दा रहे मय्यत को चादर के नीचे से हाथ फैर कर ग़ुसल दें. मय्यत को बग़ैर दस्तानों के बराहेरास्त ना छुऐं और ख़ास तौर पर सतर पर किसी की नज़र ना पड़े.
- मय्यत का सर उठाकर आहिस्तगी से उसे बैठा होने के क़रीब करें,फिर उसके पेट को अतराफ़ से नरमी से दबाऐं ताकि जो कुछ निकलना हो निकल जाए- इस मोक़े पर कसरत से पानी डालें.
- ग़ुसल देने वाला अब दस्ताने पहन कर अच्छी तरह मय्यत की तहारत (इसतंजा) करे और इस्तेमाल शुदा दस्ताने उतार कर नए दस्ताने पहनले-

वुदू

मय्यत के सर के बाल खोलदें और नमाज़ की तरह पूरा वुदू कराऐं. दौराने वुदू ना कुल्ली कराई जाए और ना नाक में पानी डाला जाए बल्कि कपड़ा या रूई के फाहे तर करके उससे मय्यत के दांतों और नथनों को साफ़ करदेना काफ़ी है. नथनों और कानों में साफ़ रूई लगादें जो ग़ुसल के बाद निकालदी जाए.

ग़ुसल का मरहला

- बेरी के पत्तों वाले पानी को इस्तेमाल करते हुए सर को शेमपू या साबुन से धोऐं.
- दाऐं जानिब से शिरू करते हुए मय्यत के सामने वाले हिस्सों को गर्दन से लेकर पाँव तक साबुन लगाकर धोऐं और फिर हलकी करवट दिलाकर पिछली तरफ़ से भी तमाम दायाँ हिस्सा धोऐं,यही अमल बाऐं तरफ़ दोहराऐं.
- ज़रूरत के मुताबिक़ ताक़ अदद (3,5,7 मर्तबा) में ग़ुसल का पानी मय्यत पर बहाऐं आख़री बार काफ़ूर मिला पानी डालें.
- मय्यत को तोलिये से ख़श्क करके ऊपर ख़ुशक चादर डाल कर गीली चादर निकाल दें और मय्यत के नीचे

भी एक ख़ुशक चादर बिछादें.

- ग़ुसल के बाद ख़ातून मय्यत के बालों की कंघी करके तीन चोटियां/लटें बना कर पीछे डालदें.

तकफ़ीन

नबी करीम ﷺने फ़रमाया:जिस किसी ने किसी मुसलमान को कफ़न दिया,अल्लाह ताला उसे सुन्दुस का लिबास पहनाएगा.(لمعجم الكبير للطبرانی: 8077)

कफ़न के अजज़ा

औरत और मर्द के कफ़न के लिए यक्सां पैमाइश तीन मोटी,साफ़, सफ़ेद,चादरें इस्तेमाल होती हैं जिनमें से एक चादर धारीदार हो तो बहतर है.

- कफ़न बांधने के लिए 3 या 5 अदद पट्टियां
- सय्यदा आयशा رضي الله عنه से फ़रमाती हैं कि हमने रसूल अल्लाहﷺ को यमन की तीन नई सफ़ेद सहूली चादरों में कफ़न दिया था,जिसमें ना क़मीस और ना ही अमामा. बस इन्हीं चादरों में उन्हें लपेट दिया गया था.

नोट:कफ़न के लिए तीन चादरें मयस्सर ना हों तो एक चादर में भी कफ़न दिया जा सकता है.

कफ़न लपेटने का तरीक़ाकार

- चारपाई के दर्मियान एक बड़ी पट्टी,सर और पाँव की तरफ़ छोटी पट्टियां बिछादें. कफ़न को मज़बूती से बांधने के लिए पांच पट्टियां भी बांधी जा सकती हैं.
- अब चारपाई पर पट्टियों के ऊपर तीनों चादरें बिछादें. चादर की लम्बाई मय्यत के क़द की लम्बाई से कम से कम एक फ़िट बड़ी हो ताकि सर और पाँव की जानिब से बांधी जा सके.

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

- तख़्ता ग़ुसल से मय्यत उठाने के लिए दो अफ़राद नीचे वाली चादर को सर और पाँव की तरफ़ से पकड़ें,मज़ीद दो अफ़राद चादर के नीचे से कमर की जगह तौलिया या मज़बूत कपड़ा डालकर मय्यत को उठाकर उसी चारपाई पर रखदें जिस पर कफ़न पहले से बिछा हुआ है.
- करवट दिलाकर नीचे से चादर निकाल लें. ऊपर की चादर अभी ना हटाऐं- क्योंकि उसके अन्दर से ही कफ़न पहनाया जाएगा.
- पहले ऊपर वाली चादर से औरत की मय्यत के सर और बालों को स्कारफ़ की तरह लपेट दें फिर बाक़ी की चादर से अच्छी तरह जिस्म लपेटें- दूसरी चादर को सर से पाँव तक लपेट दें.
- आख़री चादर लपेटने के बाद सर,पाँव और कमर की पट्टियों को बांध कर इस तरह गिरह लगाऐं कि क़बर में लिटाने के बाद ये गिरहें आसानी से खोली जा सकें.
- मय्यत को कफ़न में लपेटने के बाद तीन बार ख़ुश्बू की धूनी दें.
- ऐहराम की हालत में फ़ौत होने वाले को ग़ुसल देकर ऐहराम की चादरों में ही कफ़नाया जाएगा और ख़ुश्बू नहीं लगाई जाएगी.
- हंगामी हालत,बीमारी,एक्सीडेन्ट या जलने की वजह से मय्यत को ग़ुसल देना मुम्किन ना हो तो मय्यत को तयम्मुम करवा के कफ़न पहनाया जा सकता है.
- मय्यत को ग़ुसल देने वाले के लिए बाद में ख़ुद ग़ुसल करना मुसतहब (पसंदीदा) है ज़रूरी नहीं है. इसी तरह मय्यत को उठाने वाले के लिए भी वुज़ू करना मुसतहब है.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ग़ुसल व कफ़न के मराहिल में ग़ैर मसनून तरीक़े:

- ग़ुसल देने की जगह पर पाकीज़ा कलाम तहरीरी शक्ल में लेकर जाना या ज़बानी पढ़ना.
- मय्यत को दो बार ग़ुसल देना.
- बालों की दो चोटियां बनाकर सीने पर डालना.
- ग़ुसल मुकम्मल होने पर क़रीबी रिश्तेदारों का बारी बारी आकर मय्यत पर पानी बहाना.
- कफ़न से पहले साफ़ लिबास पहनाना.
- मय्यत की आंखों मे सुरमा लगाना.
- कफ़न पर अर्क़ गुलाब डालना या ज़मज़म में भिगोना.
- शादी के लिबास में दफ़नाना.
- कफ़न पर क़ुरआनी आयात या दूसरी दुआऐं लिखना.
- मय्यत के सरहाने क़ुरआन मजीद या अहद नामा रखना.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

मय्यत को कफ़न लपेटने का तरीक़ा

① तीन बड़ी और चौड़ी पट्टियाँ दर्मियान में,कंधे और घुटनों की जानिब और दो छोटी पट्टियाँ सर और पाँव की जानिब बिछाऐं- पट्टियों के ऊपर तीन चादरें बराबर करके तरतीब वार बिछाऐं.

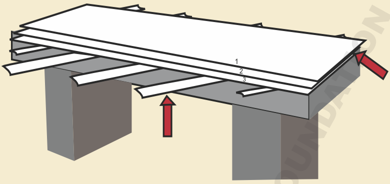

② सर और पाँव की तरफ़ से कुछ कपड़ा छोड़ कर मय्यत को चादरों के ऊपर लिटादें और फिर पहली चादर के दाऐं हिस्से को बाऐं जानिब लाकर अच्छी तरह दबादें.

③ पर्दे के लिए ढाँपी गई रंगीन चादर कफ़न की चादर ढाँपते हुए हटादी जाएगी- इसी तरह चादर का बायां हिस्सा दाऐं जानिब दबा दें.

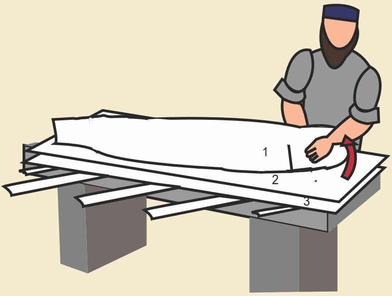

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

औरत मय्यत के लिए:

④ पहली चादर के सर की जानिब बिछे हुए हिस्से को उठा कर स्कार्फ़ की तरह लपेटते हुए सर और बालों को अच्छी तरह ढाँप दें -

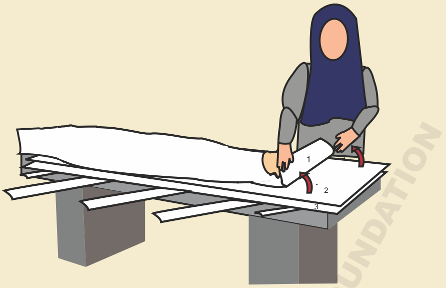

⑤ स्कार्फ़ के बाक़ी कपड़े को गर्दन के पीछे दबादें.

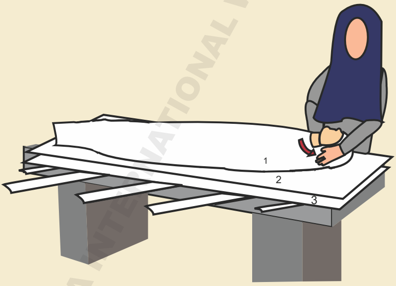

⑥ अब साइड के दोनों पल्लों से चेहरे को ढाँप दें.

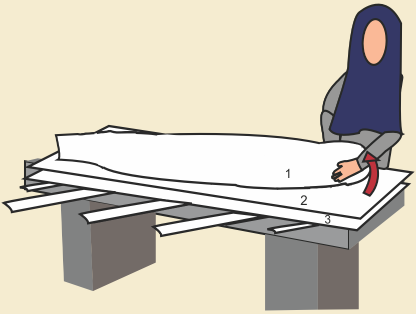

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

⑦ इसी तरह दूसरी चादर को भी सर और पाँव समेत दाऐं से बाऐं और बाऐं से दाऐं जानिब लाकर अच्छी तरह दबादें.

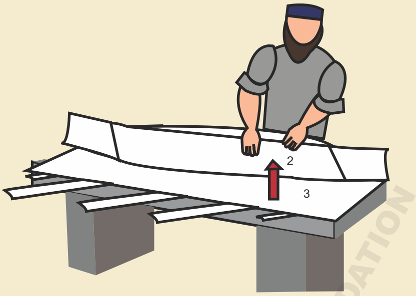

⑧ अब आख़िरी चादर को भी दाऐं से बाऐं और बाऐं से दाऐं लपेट दें -

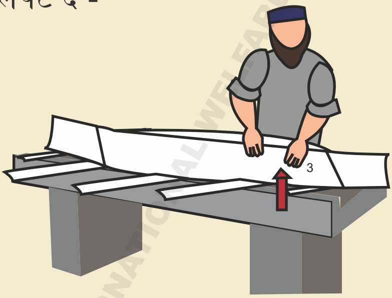

⑨ अब कफ़न को तस्वीर के मुताबिक़ पट्टियों से बाँध दें.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

June 2017, Ramadan 1438

AL-HUDA International Welfare Foundation
Post Box Number 444 Basavanagudi Bangalore 560004 ,India
Landline: +918040924255. | Mobile phone: +91-9535612224
official email: alhuda.india@gmail.com
www.alhudapk.com
www.farhathashmi.com

AL-HUDA
Publications (Pvt) Ltd.